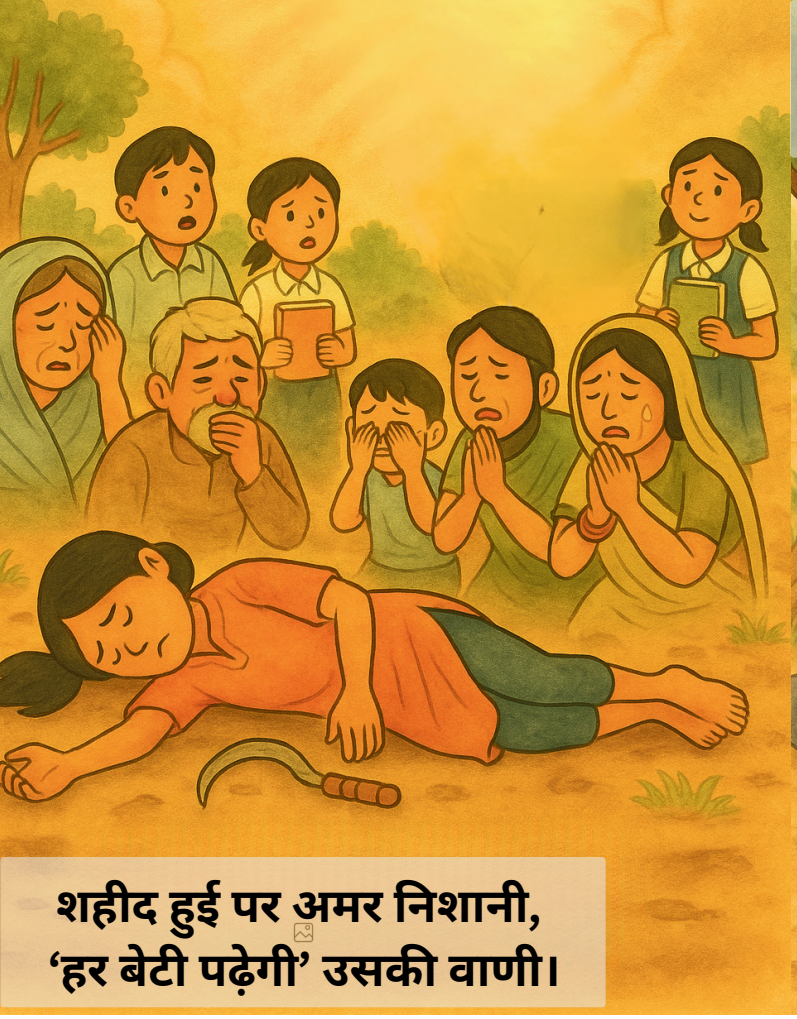

शहीद हुई पर अमर निशानी,
‘हर बेटी पढ़ेगी’ उसकी वाणी।

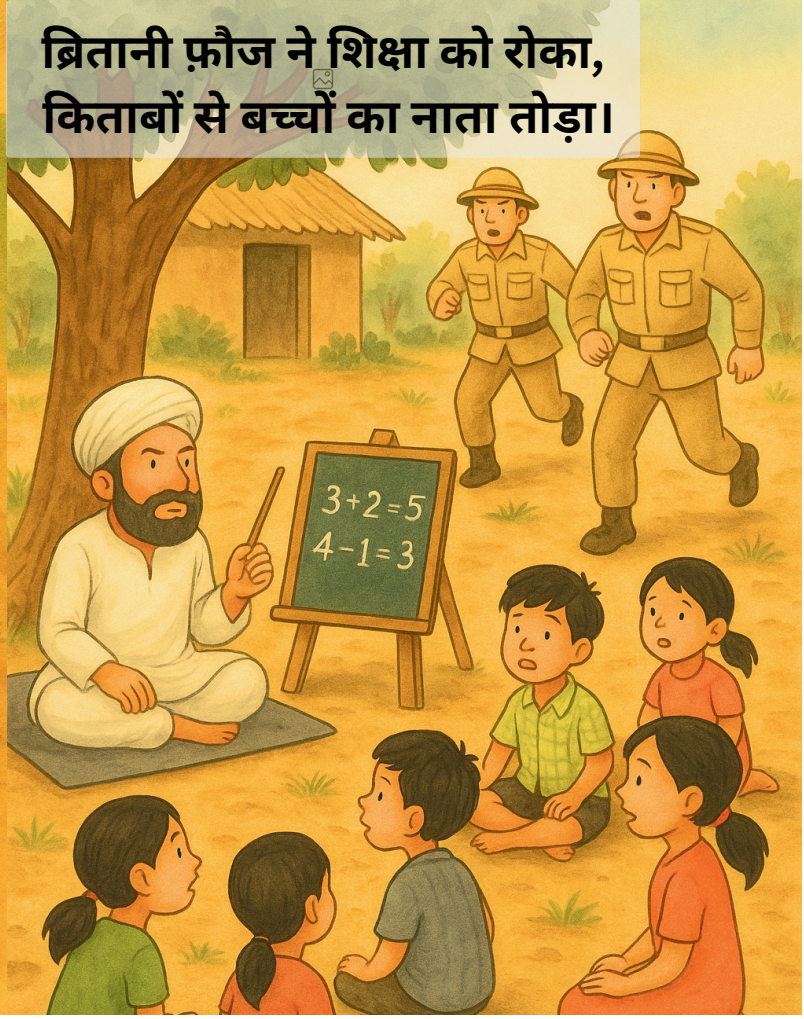

ब्रितानी फ़ौज ने शिक्षा को रोका,
किताबों से बच्चों का नाता तोड़ा।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, उदयपुर

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

नानाभाई को पीटा, सेंगा बाँधे गए,
विद्यालय के दीप अँधेरे में ढके गए।

कालीबाई ने साहस का बिगुल बजाया,
दांतली उठाकर बंधन मिटाया।

अध्याय - 15

हमारे प्रेरक

T7G3S6

बलिदान की गाथा : मानगढ़ धूणी (मानगढ़ पहाड़ी), बाँसवाड़ा (राजस्थान)

सूरज धीरे-धीरे पहाड़ियों के पीछे छिप रहा था लेकिन मानगढ़ की चोटी पर एकत्रित हजारों नर-नारियों की आँखों में आशा और विश्वास की लौ जल रही थी। वे गोविंद गुरु के नेतृत्व में अपने अधिकारों के लिए एकजुट हुए थे। पहाड़ी पर चारों ओर गूँजते भजन और मंत्रोच्चार वातावरण को एक अद्‌भुत आध्यात्मिक शक्ति से भर रहे थे।

अंग्रेजी सेना का हमला

17 नवंबर 1913 की सुबह में अंग्रेजी सेना ने मानगढ़ पहाड़ी को चारों ओर से घेर लिया। उनके हाथों में बंदूकें थी और तोपें तनी हुई थी। अंग्रेजों ने चेतावनी दी—''पहाड़ी खाली कर दो, नहीं तो परिणाम बुरा होगा!''

लेकिन मानगढ़ पर एकत्र जन-समूह अपने अधिकारों के लिए अडिग थे। वे गोविंद गुरु के बताए नियम का पालन कर रहे थे 'अन्याय नहीं सहेंगे, न ही हिंसा करेंगे।'

अंग्रेज अफसर के इशारे पर बंदूकें तन गईं और फिर...

धायं! धायं! धायं!

गोलियों की बौछार होने लगी।

पहाड़ी पर खड़े सभी स्तब्ध थे लेकिन कोई पीछे नहीं हटा। वे भजन गाते रहे और एक-दूसरे का हाथ पकड़कर डटे रहे।

चारों ओर चीख-पुकार मच गई। निर्दोष गोलियों से छलनी होते गए लेकिन किसी ने भी पहाड़ी नहीं छोड़ी। माताएँ अपने बच्चों को सीने से लगाए शहीद हो गईं। बुजुर्ग अपनी लाठियों के सहारे खड़े-खड़े गिर गए। युवा अपनी मातृभूमि को बचाने के लिए अडिग रहे।

संकल्प और संघर्ष-

गोविंद गुरु ने महर्षि दयानंद सरस्वती से प्रेरित होकर अपने अनुयायियों को अहिंसा और आत्मनिर्भरता का संदेश दिया था। वे चाहते थे कि समाज शिक्षा ग्रहण करे, शराब और बुरी आदतों को त्यागे और अपनी संस्कृति को मजबूत करे। लेकिन यह बात अंग्रेजी सरकार और स्थानीय जागीरदारों को स्वीकार नहीं थी। अंग्रेजों ने इसे विद्रोह मान लिया और मानगढ़ पहाड़ी को घेर लिया। कुछ ही घंटों में गोलियाँ चलने से लगभग 1500 नर-नारी वीरगति को प्राप्त हुए। रक्त रंजीत हुई मानगढ़ की मिट्टी आज भी इस बलिदान की गवाही देती है।

मानगढ़ धूणी आज समाज के लिए एक तीर्थस्थल बन चुका है। आज भी मानगढ़ पहाड़ी स्वाभिमान और बलिदान की प्रतीक बनी हुई है। यह स्वाभिमान, संस्कृति और आत्मसम्मान की रक्षा के लिए किया गया एक अद्वितीय बलिदान था। यहाँ हर साल हजारों लोग इस महान बलिदान को याद करने आते हैं।

जीवन-परिचय

क्रांतिनायक गोविंद गुरु

- नाम : गोविंद गुरु बंजारा
- जन्म : 20 दिसंबर 1858, बांसिया गाँव, डूँगरपुर, राजस्थान
- देहावसान : 30 अक्टूबर 1931
- योगदान :
  - सम्प (एकता) सभा की स्थापना (1883)
  - भगत आंदोलन (1890 के दशक)- धूणी
  - विद्यालय स्थापना, स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग, अन्याय के विरोध की प्रेरणा।
  - मानगढ़ बलिदान (17 नवंबर 1913)- अंग्रेजों द्वारा हजारों लोगों का नरसंहार जिसे 'राजस्थान का जलियांवाला बाग' कहा जाता है।
- राष्ट्रीय स्मारक का दर्जा (2022)- मानगढ़ धाम को भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया।
- उनके सिद्धांत :
  - शराब, माँस, चोरी और व्यभिचार से दूर रहना।
  - परिश्रम कर सादा जीवन जीना।
  - प्रतिदिन स्नान, यज्ञ एवं कीर्तन करना।
  - विद्यालय स्थापित कर बच्चों को शिक्षित करना।
  - अन्याय का विरोध और स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करना।

मुख्य केन्द्र घरेलू शिक्षा, गुरुकुल, विद्या आश्रम, उपाश्रय, पाठशाला, मकतब और मदरसे, मठ आदि रहे हैं। परिवार प्राथमिक और व्यवसायिक शिक्षा के प्रमुख केन्द्र होते थे।

राजपूताना में भी शिक्षा विभिन्न काल क्रमों से गुजरी है। ब्रिटिश साम्राज्य ने 19वीं शताब्दी से पूर्व की शिक्षा को, देशी शिक्षा (इंडिजिनियस एज्युकेशन) से सम्बोधित किया। इसके बाद की शिक्षा को, अंग्रेजी शिक्षा, पाश्चात्य शिक्षा या आधुनिक शिक्षा के नाम से सम्बोधित किया गया।

इस प्रकार 19वीं शताब्दी में एक ओर शिक्षा का पारम्परिक स्वरूप नजर आता है तो दूसरी ओर अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव। 1819 में आधुनिक शिक्षा का स्कूल अजमेर में खोला गया। इसके पश्चात पुष्कर, भिनाय एवं केकड़ी में भी स्कूल खोले गए। लेकिन लोगों द्वारा, ईसाई धर्म की दी जाने वाले शिक्षा का विरोध किया गया। परिणामस्वरूप ये सभी स्कूल बंद कर दिए गए।

1835 ई में अंग्रेजी भाषा, राजकीय भाषा बना दी गई। अतः अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली का महत्त्व बढ़ा। फलस्वरूप, रियासतों में आधुनिक शिक्षा प्रणाली को अपनाने वाले स्कूल खुलने लगे। 19वीं सदी के अंत तक, जैसलमेर को छोड़कर राजपूताना की सभी रियासतों में शिक्षण संस्थाएँ प्रारंभ हो चुकी थीं।

प्राथमिक स्कूल और मिडिल स्कूल क्रमोन्नत होकर हाई स्कूल बने। इनमें सबसे पहले अजमेर का सरकारी स्कूल 1851 में हाई स्कूल बना। रियासतों में हाई स्कूल कक्षाओं की पढ़ाई प्रारंभ हुई।

राजपूत शासकों, रियासतों के शासकों, राजकुमारों, सामन्तों के पुत्रों के लिए अंग्रेजी शिक्षा का पृथक प्रबन्धन करने के उद्देश्य से, सन् 1872 में वायसराय लार्ड मेयो के नाम पर अजमेर में, मेयो कॉलेज की स्थापना हुई, जिसका प्रथम सत्र 1875–76 में प्रारम्भ हुआ।

पंडित जनार्दन राय नागर ने 'सभी के लिए शिक्षा' के उद्देश्य से 21 अगस्त 1937 में राजस्थान विद्यापीठ संस्था की स्थापना की।

महिला शिक्षा

1861 में मिशनरी संस्था, कन्या वर्नाकुलर स्कूल प्रारंभ किया। सरकार द्वारा 1866 ई में पुष्कर अजमेर मेरवाड़ा केन्द्र शासित क्षेत्र में, प्रथम सरकारी कन्या स्कूल खोला गया। देशी रियासतों में महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के प्रयास हुए, परिणाम स्वरूप उदयपुर, जयपुर, भरतपुर, अलवर, कोटा, झालावाड, टोंक, बीकानेर आदि रियासतों में भी कन्या विद्यालय खोले गए।

प्रमुख जननायक

राजस्थान की भूमि में कुछ ऐसे जननायक भी हुए हैं, जिन्होने न सिर्फ स्वतंत्रता में अपना

© RSCERT Not to be Republished

योगदान दिया बल्कि समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने के साथ ही स्त्री शिक्षा हेतु विशेष प्रयास किये।

1. भोगीलाल पण्ड्या

भोगीलाल पण्ड्या को राजस्थान में 'आदिवासियों का मसीहा' और 'वागड़ के गाँधी' के नाम से जाना जाता है। इनका जन्म 1904 में डूंगरपुर में हुआ। इन्होंने बच्चों एवं प्रौढ़ों के लिए पाठशाला स्थापित की। यह पाठशाला आगे चलकर 'वागड़ सेवा मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

2. नाना भाई खांट (भील), सेंगा भाई, कालीबाई

डूंगरपुर राज्य में जनजागृति हेतु सेवा संघ द्वारा पाठशालाएँ खोली गईं। राज्य के पुलिस अधिकारी ने, नाना भाई को पाठशाला बंद करने के लिए कहा। उनके मना करने पर उनकी हत्या कर दी गई।

नाना भाई के शहीद होने के बाद, पाठशाला के दूसरे अध्यापक सेंगा भाई को भी फौज ने क्रूरता से पीटा और उन्हें वाहन के पीछे घसीटकर ले जाने लगे। किसी ने इसका प्रतिरोध नहीं किया। लेकिन 13 वर्षीय भील बालिका काली बाई ने, जो खेत से घास काटकर आई थी, भीड को चीरते हुई वाहन के पीछे बंधे सेंगा भाई की रस्सी को दाँतली से काट दिया और उन्हे बचा लिया। वाहन में बैठे फौजी ने, काली बाई पर गोली चला कर हत्या कर दी। अल्पायु में यह बालिका शहीद हो गई। नाना भाई खांट, सेगाभाई, काली बाई के त्याग ने, शिक्षा की स्थिति को मजबूत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. करणी सिंह

बीकानेर रियासत के, महाराजा करणी सिंह का जन्म 1924 में हुआ था। वे 1952 से 1977 तक 25 साल लोकसभा के सदस्य रहे। इनके द्वारा बालिका शिक्षा के लिए, सराहनीय प्रयास किए गए। सहशैक्षिक गतिविधियों के उन्नयन हेतु खेलकूद, निशानेबाजी आदि को प्रोत्साहित किया एवं छात्रवृत्ति की शुरूआत भी की।

4. हीरालाल शास्त्री

हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवम्बर 1899 जोबनेर (जयपुर) में, एक कृषक परिवार में हुआ। प्रारंभ से ही समाज सेवा की भावना इनके मन में रही। जिसके कारण इन्होंने जयपुर राज्य की सेवा का परित्याग कर दिया। सन् 1929 में इन्होंने दूरस्थ एवं पिछड़े गाँव वनस्थली को अपना कार्यक्षेत्र चुना। यहाँ इन्होंने 'जीवन कुटीर' नामक संस्था की स्थापना की, जहाँ समर्पित सामाजिक ग्रामीण कार्यकर्ताओं को रोजगार और ग्रामीण क्षेत्र की पुनः रचना हेतु प्रशिक्षण दिया गया। ये आगे चलकर प्रजामण्डल में भी सक्रिय रहे। 1948 में जयपुर स्टेट के, एवं 30 मार्च 1949 को राजस्थान के

© RSCERT Not to be Republished